SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

आधुनिक युग मे माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

माया कुमारी, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
मिथिलेश कुमार, (Ph.D.), शोधनिर्देशक, समाजशास्त्र विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

माया कुमारी, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
मिथिलेश कुमार, (Ph.D.), शोधनिर्देशक,
समाजशास्त्र विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 07/05/2022
Revised on : -----
Accepted on : 14/05/2022
Plagiarism : 01% on 09/05/2022

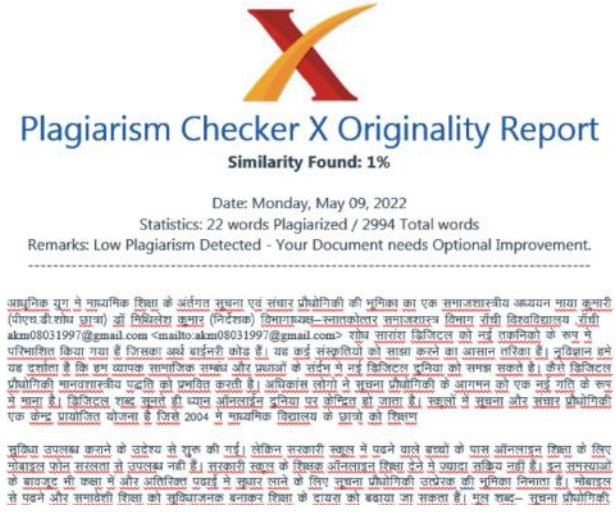
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Monday, May 09, 2022
Statistics: 22 words Plagiarized / 2994 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

आधुनिक युग मे माध्यमिक शिक्षा के अंर्तगत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन माया कुमारी (पीएच.डी.शोध छात्रा) डॉ मिथिलेश कुमार (निर्देशक) विभागाध्यक्ष–स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग राँची विश्वविद्यालय राँची akm08031997@gmail.com <mailto:akm08031997@gmail.com> शोध सारांश डिजिटल को नई तकनिकों के रूप मे परिभाषित किया गया हैं जिसका अर्थ बाईनरी कोड हैं। यह कई संस्कृतियो को साझा करने का आसान तरिका हैं। नृविज्ञान हमे यह दर्शाता है कि हम व्यापक सामाजिक सम्बंध और प्रथाओं के संदर्भ मे नई डिजिटल दुनिया को समझ सकते है। कैसे डिजिटल प्रौद्योगिकी मानवशास्त्रीय पद्धति को प्रभवित करती है। अधिकांस लोगो ने सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन को एक नई गति के रूप मे माना है। डिजिटल शब्द सुनते ही ध्यान ऑनलाईन दुनिया पर केन्द्रित हो जाता है। स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी एक केन्द्र प्रायोजित योजना है जिसे 2004 मे माध्यमिक विद्यालय के छात्रो को शिक्षण सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू किया गया। लेकिन सरकारी स्कूल में पढने वाले बच्चों के पास ऑनलाइन शिक्षा के लिए मोबाइल फोन सरलता से उपलब्ध नही हैं। सरकारी स्कूल के शिक्षक ऑनलाइन शिक्षा देने मे ज्यादा सक्रिय नहीं हैं। इन समस्याओं के बावजूद भी कक्षा में और अतिरिक्त पढाई मे सुधार लाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी उत्प्रेरक की भूमिका निभाता हैं। मोबाइल से पढने और समावेशी शिक्षा को सुविधाजनक बनाकर शिक्षा के दायरा को बढाया जा सकता हैं। मूल शब्द– सूचना प्रौद्योगिकी

शोध सार

डिजिटल को नई तकनीको के रूप मे परिभाषित किया गया हैं जिसका अर्थ बाईनरी कोड हैं। यह कई संस्कृतियो को साझा करने का आसान तरीका हैं। नृविज्ञान हमे यह दर्शाता है कि हम व्यापक सामाजिक सम्बंध और प्रथाओं के संदर्भ मे नई डिजिटल दुनिया को समझ सकते है की कैसे डिजिटल प्रौद्योगिकी मानवशास्त्रीय पद्धति को प्रभावित करती है। अधिकांश लोगो ने सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन को एक नई गति के रूप मे माना है। डिजिटल शब्द सूनते ही ध्यान ऑनलाईन दुनिया पर केन्द्रित हो जाता है। स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी एक केन्द्र प्रायोजित योजना है जिसे 2004 मे माध्यमिक विद्यालय के छात्रो को शिक्षण सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू किया गया। लेकिन सरकारी स्कूल में पढने वाले बच्चों के पास ऑनलाइन शिक्षा के लिए मोबाइल फोन सरलता से उपलब्ध नही हैं। सरकारी स्कूल के शिक्षक ऑनलाइन शिक्षा देने मे ज्यादा सक्रिय नहीं हैं। इन समस्याओं के बावजूद भी कक्षा में और अतिरिक्त पढाई मे सुधार लाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी उत्प्रेरक की भूमिका निभाता हैं। मोबाइल से पढने और समावेशी शिक्षा को सुविधाजनक बनाकर शिक्षा के दायरा को बढाया जा सकता हैं।

मुख्य शब्द

सूचना प्रौद्योगिकी, ऑनलाईन शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, आधुनिक युग.

शिक्षा व्यक्ति का मानसिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा चरित्र का विकास करती है, उन्हें ऐसे व्यवहार के लिए प्रेरित करती है जो खुले समाज की विशेषता है। शिक्षा मानव जीवन की अमूल्य धरोहर है। शिक्षा मनुष्य

के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। शिक्षा से ही मानव की सम्पुर्ण प्रतिभा योग्यता एवं संम्भावनाओं का विकास होता है। अशिक्षित व्यक्ति किसी भी समाज के लिए अभिशाप होता हैं, क्योकि वह समाज का जिम्मेदार नागरिक नहीं बन सकता है। दुर्खीम ने शिक्षा को एक विद्या के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है। इन्होंने कहा ''शिक्षा कैसी भी हो इसे नैतिकता पर जोर देना चाहिए।'' भारत सरकार ने जुलाई 2015 में ''डिजिटल इडिया'' पहल शुरू की, जिससे ऑनलाइन बुनियादी ढांचे को मजबूत किया गया और नागरिको के बीच इंटरनेट पहुंच का विस्तार किया गया। सरकार ने भारतीय छात्रों के लिए ई–लर्निंग को बढावा देने के लिए मई 2020 में पीएम ई–विद्या कार्यक्रम की शुरूआत की। इससे लगभग 25 करोड स्कूली छात्रो को लाभ हुआ। सन् 2015 में ई–पाठशाला पोर्टल लॉच किया गया, जिससे स्मार्टफोन ,कम्पयुटर के माध्यम से शिक्षा ग्रहन किया जा सकता है। छात्र अपनी गति से सीख सकते है और फिर उसे पढ सकते है, छोड सकते है, या अपनी पसंद के अनुसार अवधारणाओं को तेज कर सकते है क्योकि अध्ययन से ज्ञात होता है कि बच्चे आसानी से विचलित होते है।

वर्तमान समय में एक धारणा बनी है कि शिक्षा की उपलब्धि मे 10वीं और 12वीं कक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। इन कक्षाओ मे बच्चों को अनिवार्य रूप से अच्छा प्रर्दशन करने की आवश्यकता है। आधुनिक युग मे इस धारणा को बदलने की आवश्यकता है, क्योकि ऐसे पर्याप्त सबूत उपलब्ध है जो स्पष्ट रूप से दिखाते है कि बच्चें मूलभूत कौशल प्राप्त करने मे असमर्थ है तो उच्च कक्षा मे उनके लिए पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं को पूरा करना बहुत मुश्किल हो जाता है। माध्यमिक कक्षा वह विभाजन बिन्दु है जहां बच्चों से सिखने के लिए पढने, की अपेक्षा की जाती है। इस स्तर तक यदि बच्चें ऐसा नही कर पाते तो वे अनिवार्य रूप से पीछे छूट जाते हैं। माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत कक्षा आठवीं से दसवीं तक के छात्रो को शामिल किया जाता है। इन छात्रों का शिक्षा के संदर्भ मे सूचना प्रौद्योगिकी की जागरूकता कैसी है? छात्र बदलते समय से अवगत है या नहीं, क्योकि युवा ही देश के भविष्य है।

परिवर्तन समाज का शाश्वत नियम है चाहे वह प्राकृतिक, सांस्कृतिक या तकनिकी के क्षेत्र में ही क्यो न हो। 21वीं सदी को संचार क्रांति का युग माना जा रहा है। समाज मे होने वाला हर एक परिर्वतन समाज के सभी पहलूओं पर अपना प्रभाव छोड़ती है और शिक्षा भी सामाजिक जीवन का एक पहलू है। 19वीं सदी से ही शिक्षा के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का आगमन माना जाता है। आठवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत 1993–98 मे माध्यमिक और उच्चत्तर माध्यमिक स्कूलों मे सूचना प्रौद्योगिकी के लिए अनुदान प्रदान किया गया था। ऐसा माना जा रहा है कि सूचना प्रौद्योगिकी का शिक्षा के क्षेत्र मे आगमन से विद्यार्थियों का पढ़ाई के प्रति निरसता को कम किया जा सकता है। आधुनिक समय मे शिक्षा विद्यार्थी केंद्रित होती जा रही है, इस विधि से छात्र स्वयं सीखते है। सूचना प्रौद्योगिकी को सार्वभौमिक, सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप मे स्वीकार किया गया है, परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी के जागरूकता के स्तर और उपयोग को उत्पादन के स्तर मे असमानता देखा जा सकता है, जो देश के आर्थिक विकास को प्रभावित कर सकता है। सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र मे कार्यरत देशो के लिए आई.सी.टी. को समझने और उसके साथ समन्वय स्थापित करना काफी महत्वपूर्ण है। आज सूचना प्रौद्योगिकी मे लगभग 2.3 मिलियन लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नियोजित है। भारत मे सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के क्षेत्र विशाल भौगोलिक और जन्सांख्यिकी आधार पर असमानता पाई जाती है। आज के समय मे शिक्षा कहीं भी कभी भी संभव है। कम्प्युटर मोबाइल या अन्य डिजिटल उपकरण के प्रयोग से शिक्षा कहाँ तक उपयोगी है, क्या सभी छात्र के पास सूचना प्रौद्योगिकी के साधन उपलब्ध है? 21वीं सदी संचार क्रान्ति का वाहक है, आधुनिक युग मे हर एक नागरिक को तकनिकी शिक्षा की आवश्यकता है। स्मार्ट क्लास की अवधारणा भी तभी संभव होगी जब सभी भेद–भाव मिटाकर क्षेत्र के सभी स्कूलों मे सूचना प्रौद्योगिकी का समान वितरण और शिक्षक उपलब्ध हो। भारतीय संदर्भ मे शिक्षक के महत्व को कौन नहीं जानता है, ऋषि व्यास ने स्कंद महापुराण में लिखा हैः

''गुरूब्रम्हा, गुरूर्विष्णुः, गुरू देवो महेश्वरः।

गुरूः साक्षात् परं ब्रम्हा तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शिक्षक का विशेष महत्व होता है। छात्र शिक्षक के व्यक्तित्व से प्रभावित होते है

इसलिए शिक्षक छात्र–छात्राओ को यह समझाने की कोशिश करे कि कैसी सूचनाएँ भविष्य के लिए उपयोगी है और कौन सी नही। वर्तमान समय मे इन्टरनेट पर अनेक प्रकार की सूचनाएँ और अफवाह इत्यादि हर समय उपलब्ध रहते है। विकसित देशो के नागरिकों का सामना इस प्रक्रिया से थोडा पहले हुआ, लिहाजा वें अपने विवेक से फैसला करते है कि किस चीज को उपयोग मे लाना उनके लिए ठीक रहेगा। लेकिन भारत जैसे विकासशील देंश मे, जहाँ शिक्षा और जागरूकता का स्तर एक जैसा नही है, वहां लोग खबरों और सूचनाओं के अनेक विकल्पों के बीच दुविधा में पड जाते हैं। कई बार वे तथ्यों की जांच नहीं कर पाते और गलत को सही मान बैठते हैं। आज हर व्यक्ति प्रकाशक है इसलिए सूचनाओं के स्त्रोत असंख्य हो गये है। माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थी किशोर अवस्था के होते है, उन्हे सही और गलत का समझ नही होता है। इस समय मे छात्रों को सूचनाओं के प्रति जागरूक करना जरूरी है क्योंकि सुचना के प्रवाह को रोकना नामुमकिन हो गया है। ऐसे माहौल में लोगों के पास ऐसे टूल्स होने चाहिए, जिससे वे सूचनाओं का विश्लेषण कर सके और यहां तक कि उन सूचनाओं को खारिज भी कर सके। सूचनाओं की बमबारी बचपन के उम्र से ही शुरू हो गई हैं इसलिए हमें एसे तथ्य ढूंढनें होगे जिनसे तथ्य और काल्पनिक बातों में फर्क किया जा सके। विभिन्न शोध ने यह स्पष्ट किया है कि मूलभूत शिक्षा बाद की कक्षाओं के लिए सफल शैक्षणिक विकास की आधारशिला है। हमने स्मार्टफोन की लत से मानवता खो दी है। बच्चें पहले दादी–नानी की कहानियाँ सूना करते थे, जीवन के मूलभूत संस्कार सिखते थे, लेकिन आधुनिक युग मे बच्चों का मानसिक विकास भी तेजी से हो रहा है, ऐसी अवस्था में वे हाथ मे मोबाइल आते ही वीडिओ गेम, कार्टून या कई अन्य प्रकार के वीडिओ देखने लगते है और ये पारिवारिक सम्बंधो से दुर होते जा रहा है। उनका मानसिक विकास अवरोधित हो रहा है। किशोरावस्था ही जीवन की नींव है, इस उम्र मे किया हुआ हर कार्य व्यक्ति को जीवन भर प्रभावित करता है। सही व्यक्तित्व के विकास के लिए यह जरूरी है कि छात्रो को सूचनाओ को छांटने का अनुभव हो, इस बारे मे भी शिक्षक कक्षा मे छात्रो तक जागरूकता फैलाए। इस पहल से छात्र भविष्य मे सामाजिक और सक्रिय नागरिक बन सकेगें। स्मार्टफोन, इन्टरनेट, कम्प्युटर इत्यादि अबोध अवस्था के शिक्षण के लिए कितना उपयोगी है, अभी कुछ कहा नही जा सकता । लेकिन स्मार्टफोन विद्यार्थी के जीवन मे ज्ञान के क्षितिज की तरह कार्य करती है, जिसका कोइ अंत नही है। यह छात्रो के हर समस्या का त्वरित समाधान है।

दूरदर्शन का प्रयोग भारत मे आज से लगभग तीन दशक पूर्व हुआ था, तभी से सप्ताह मे एक दो बार शैक्षणिक कार्यक्रम का प्रसारण शुरू हुआ था। इसका उद्देश्य था पिछडे क्षेत्रो को विकास की धारा से जोडना। शिक्षा का ऑनलाइन हो जाना आधुनिक युग की आवश्यकता बन गई है। पाठ्यपुस्तको से ज्ञान की प्राप्ति होती है, किन्तु वर्तमान समय मे पुस्तके महंगी हो गई है और इन्टरनेट से पढना सरल सुगम साधन हो गया है। मल्टीमिडिया ने ज्ञान प्राप्ति के मार्ग को भी जीवंत बना दिया है। इन्टरनेट विद्यार्थी के लिए एक लाइब्रेरी का कार्य कर रही है। सभी प्रकार के समाचार पत्र, ई–बुक, पत्र–पत्रिका, और पठन योग्य सामग्री एक जगह एकत्र करके विद्यार्थी के लिए सुलभ और सुगम हो गई है। यह विद्यार्थी को पढ़ने मे मदद करता है, लेकिन बिना शिक्षक के र्निदेश से यदि सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना है तो विद्यार्थी को आत्म–अनुशासन की आवश्यकता होगी। मार्टिन लुथर ने कहा है किः

''सच्ची शिक्षा के दो लक्ष्य हैंःएक बुद्धिमता दुसरा चरित्र''।

समाजशास्त्री मार्गरेट मीड का कहना है कि ''बच्चो को सिखाईये की कैसे सोचा जाये, ना कि क्या सोचा जाये''। विद्यार्थियो के अंदर चेतना जागृत करना शिक्षक और माता–पिता का कार्य है, यह औपचारिक शिक्षा के माध्यम् से संभव है।

जिम रोहन ने कहा है कि ''औपचारिक शिक्षा जीवन यापन करने योग्य बनाती है, स्व–शिक्षा सफल बनाती है''। इसलिए कहा जाता है कि कर के सीखने से छात्र सफल होते है। सूचना प्रौद्योगिकी एक ही प्रश्न को भिन्न–भिन्न रूप से समझने मे सहायता पहुँचाते है। मोबाइल सस्ता और सरलता से सभी लोगो तक पहुँच कर शिक्षा के क्षेत्र मे अमूल्य योगदान दे रहा है। स्मार्टफोन सभी लोगो की पहली पसंद बना हुआ है। यह एक साथ कई समस्याओं का समाधान है, सबके लिए सरल और त्वरित माध्यम भी है। लेकिन चुनौती यह है कि रोजमर्रा के

पाठ्यक्रम का परिचय, जिससे विद्यार्थी अनभिज्ञ है, कैसे मोबाइल द्वारा शिक्षण के दायरे को बढाया जाए, जिससे नई पीढ़ी भविष्य रास्ते से गुमराह न हो जाए। यह जरूरी नही कि हर छात्र मोबइल का प्रयोग ज्ञान ग्रहण करने के लिए करते हो। मोबाइल मल्टीमिडिया का स्त्रोत है, इसमे कई मनोरंजनात्मक कार्यक्रम के भी सॉफ्टवेयर है जिससे विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के समय मे मनोरंजन करके अपना अमुल्य समय को नष्ट करते है। मोबाइल, कम्प्युटर और इंटरनेट एक बहुआयामी आविष्कार है, जिसके द्वारा विषय–वस्तु को आसानी से समझा जा सकता है। नई शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थी के भविष्य को उज्जवल बनाने और तकनिकी रूप से शिक्षित बनाने के लिए ही समर्पित है। भारत मे पहले मौखिक संचार होता था, फिर प्रिंट का काम शुरू हुआ, पुस्तके आई और अब सूचना प्रौद्योगिकी आई। पारंपरिक रूप से पहले संचार के साधन के लिए पत्र–पत्रिका, अखबार सूचना के माध्यम रहे है। आधुनिक युग मे नई विचारधारा से विद्यार्थी को जोड़ने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम ई–बुक, इंटरनेट, मोबाइल, प्रोजेक्टर इत्यादि का प्रयोग किया जा रहा है। नई प्रौद्योगिकी के आने से कई बदलाव संभव हुये है। कोविड–19 के समय औपचारिक स्कूली शिक्षा प्रणाली की सीमाओं और सीखने की प्रक्रियां की निरंतरता सुनिश्चित करने मे माता–पिता की भागीदारी के महत्व को भी प्रदर्शित किया। महामारी के समय भी देश की शिक्षा व्यवस्था पूर्ण रूप से बाधित नही हुई है। उत्कृष्टता पर ज्यादा ध्यान देने से शिक्षा और ज्ञानोन्मुख बन गई है। परम्परागत शिक्षा प्रणाली में छात्र शिक्षक और स्कूल के वातावरण पर निर्भर रहते थे। लेकिन आधुनिक युग मे शिक्षा प्रणाली मे महत्वपूर्ण बदलाव आये है। अब शिक्षा और उससे सम्बंधित जानकारी प्रत्येक छात्र को किसी भी समय संभव है। अब स्कूल के सभी छात्र वाट्सप, ट्विटर पर ग्रुप बना कर सूचनाये आदान प्रदान करते है।

सूचना प्रौद्योगिकी भारत जैसे विकासशील देश के लिए एक नई उम्मीद की किरण है, शिक्षित बेरोजगारी कम करने का। शिक्षित और रोजगार योग्य के बीच की गहराई को कम करना है। सभी छात्रों को तकनिकी और कौशल विकास के साथ सम्बधित किया जा रहा है। इस प्रकिया के द्वारा आगामी वर्षो मे प्रत्येक छात्र को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम् का प्रयोग की आदत बन जायेगी जिसके द्वारा प्रगति के मार्ग प्रश्सत होंगे। मोबाइल के प्रयोग का छात्रों पर पड़ने वाले प्रभाव अभी चर्चा के विषय बने हुये है। दुसरी तरफ सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से वैश्विक शिक्षा के सपने साकार होते दिख रहे है। सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से समय और दूरी का फासला लगभग समाप्त हो गया है। विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के कला कौशल और संस्कृतियों से परिचित हो रहें हैं। लेकिन इस क्षेत्र मे भी कई चुनौतिया सामने आ रही है– गरीबी, भ्रष्टाचार और निरक्षरता। इन चुनौतियों से उभरने के लिए प्राथमिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी का निवेश करना आवश्यक है, क्याकि आधुनिक युग युवा वर्ग पर निर्भर है। देश का भविष्य कहे जाने वाले युवा वर्ग को आने वाले भविष्य से अवगत करना जरूरी है। चीन मे एक कहावत कही जाती है, कि ''मुझे बताओ मै भूल जाऊंगा, मुझे दिखाओ मै शायद याद रखुंगा, मुझे शामिल करो मैं समझुंगा।'' इसलिए यह कहा जाता है कि छात्र कर के सीखते है, तो ज्यादा समझते है। नई प्रौद्योगिकीयाँ सभी समस्यॉ को हल कर सकती है, लेकिन हम अपनी परम्परागत शिक्षा प्रणाली को भूलते जा रहे है। आधुनिक समय मे भारत जैसे विकासशील देश मे सभी छात्रों के पास तकनिकी सुविधा उपलब्ध हो यह विषय सोचनीय है। इस डिजिटल खाई को पाटना जरूरी है। हर संभव कोशिश सरकार कर रही है कि गरीब, अमीर के बीच बढ़ती खाई को समाप्त किया जाये। सभी को तकनिकी सुविधा का लाभ प्राप्त हो, चाहे वह सरकारी स्कूल हो या निजी स्कूल। आर्थिक रूप से पिछडे हुये छात्र के बीच समानता का माहौल बनाना जरूरी है। देश के विद्यार्थियों को उन्नत ऐड–टेक (शिक्षा प्रौद्योगिकी) एक ही प्लेटफार्म पर उपलब्ध कराने की कोशिश हाल ही मे शुरू की गई। ए.आई.टी. ई. के द्वारा क्षेत्रिय भाषा मे तकनिकी की पाठ्यपुस्तक भी लॉच की गई है जिससे विद्यार्थियों की सोचने समझने की शक्ति मे वृद्धि होगी। अखिल भारतीय तकनिकी शिक्षा परिषद का मुख्यालय दिल्ली मे है। यह तकनिकी शिक्षा की गुणवत्ता विकास को भी सुनिश्चित करती है। शिक्षा के स्तर मे सुधार के प्रयास तभी संभव होंगे जब समानता पर आधरित और समावेशी व्यवस्था अपनाने पर पूरा बल दिया जायेगा तथा सभी स्कूलो मे समान रूप से शिक्षा सम्बन्धित सुविधा उपलब्ध हो। गुणवत्तापुर्ण शिक्षा के लिये आवश्यक है कि ग्रामीण–शहरी भेदभाव, क्षेत्रिय या डिजिटल भेदभाव नही होना चाहिए। सीखने की प्रकिया समेकित, समावेशी और सुखद होनी चाहिए, जिससे छात्रों

का सर्वांगीण संभव होता है ।

निपुण भारत मिशन 21वीं सदी के कौशल को बढावा देता है और रटकर याद रखने की जगह विवेचनात्मक सोच, वैज्ञानिक स्वभाव और गतिविधि आधारित शिक्षा का उपयोग करता है। स्पष्ट रूप से देखा जाए 1986 के राष्ट्रीय शिक्षा नीति मे संशोधन किया गया क्योकि सामान्य शिक्षा के साथ व्यवसायिक शिक्षा को भी एकीकृत करना। इस परिकल्पना का महत्वपूर्ण लक्ष्य लाखो बच्चो को उनके स्कूल के वर्षो मे ही एकीकृत और कौशल शिक्षा प्रदान करना जैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे उल्लेख किया गया है– ''शिक्षा का उदेश्य न केवल संज्ञानात्मक विकास होगा, बल्कि चरित्र निर्माण और 21 वी सदी के प्रमुख कौशल से लैस समग्र और बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्तियों का निर्माण करना होगा। स्कूल मे कौशल शिक्षा इस उदेश्य की दिशा का एक साधन है। वर्तमान मे 1.5 मिलियन से अधिक विद्यार्थी अपने माध्यमिक और उच्यत्तर माध्यमिक पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप मे व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर रहे है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आदर्श बदलाव की सिफारिश है। सभी चरणो मे विवेचनात्मक सोच, आर्दशात्मक शिक्षा, जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा देने मे क्रान्तिकारी भुमिका की संकल्पना है। यह बच्चों को वास्तविक जीवन में गणितीय संक्रियाओं का उपयोग करने मे सक्षम बनायेगी। शिक्षार्थी ज्ञान प्राप्त करेगा, जो हासिल किया है उसे समझेगा, और समस्याओं को हल करने के लिए ज्ञान के अनुप्रयोग मे उचित निर्णय ले सकेगा। देश का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि तेजी से बदल रही इस दुनिया में हमारे बच्चों को कितना बेहतर सीखने का मौका मिलता है।

''अशिक्षित को शिक्षा दो
अज्ञानी को ज्ञान,।
शिक्षा से ही बन सकता है,
भारत देश महान''।।

निष्कर्ष

स्कूली शिक्षा व्यवस्था मे आया नया बदलाव बच्चों पर पुस्तकों का बोझ कम करने, और कोचिंग की व्यवस्था समाप्त करने पर खास जोर दिया गया है। पुरानी चली आ रही शिक्षक केंद्रित व्यवस्था की जगह विद्यार्थी केंद्रित व्यवस्था को उत्तम माना जा रहा हैं। छात्र की रूचि के अनुसार पाठ्यक्रम के चयन की व्यवस्था है। देश मे बुनियादी ढ़ांचे को मजबूत करने पर सरकार के फोकस से डिजिटल शिक्षा प्रेरित हुई है। अब समय आ गया है कि देश मे बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाया जाए। आज के युवा में 'कैन डू' यानि कर सकने की भावना है जो हर पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

सुझाव

सरकारी और निजी स्कूल में डिजिटल गहराई को कम करने के उचित प्रयास किया जाए। डिजिटल शिक्षा का मूल्यांकन करने के लिए उचित व्यवस्था को लागू करना चाहिए जिसके द्वारा बच्चों में सीखने की प्रक्रिया बेहतर हो सके। बिजली व्यवस्था और नेटवर्क का सभी स्थान पर प्रबंध करने का प्रयास किया जाए। इंटरनेट पर उपलब्ध अनावश्यक सूचनाओं के अम्बार को कम करने की टूल का निर्माण करना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. *योजना,* पब्लिकेशन डिविजन, सूचना भवन नई दिल्ली, 2021, जनवरी।
2. *योजना,* पब्लिकेशन डिविजन, सूचना भवन नई दिल्ली, 2022, जनवरी।
3. *योजना,* पब्लिकेशन डिविजन, सूचना भवन नई दिल्ली, 2022, फरवरी।
4. दैनिक जागरण अखबार।
5. साहु गायत्री, *बच्चों कें विकास में मिडिया की भूमिका*।

6. पाण्डेय, रवि प्रकाश, *वैश्वीकरण और समाज*।
7. चौबे, सरयु प्रसाद, *शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार*।
8. सिंह प्रदीप, च्यवन अभिषेक, (2014), *शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी*।
9. भार्गव नरेश, (2014), *वैश्वीकरण, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्षय,* रावत पब्लिकेशन।
10. आहुजा राम, *सामाजिक समस्याऐ,* रावत पब्लिकेशन।
11. www.google.com

****